आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 दिसम्बर, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10-11 दिसम्बर, 2020

वर्ष : 78 अंक : 12
मार्गशीर्ष, 2077 मूल्य : ₹ 100
पृष्ठ संख्या 476

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

दिसम्बर, 2020

जैन जीवनशैली विशेषाङ्क

आचार्य हस्ती
दीक्षा-शती वर्ष

75th सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

Website : www.jinwani.in

पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण और दूसरे सदस्यों के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।

– आचार्य श्री हस्ती

10-11 दिसम्बर 2020
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

जैन जीवनशैली विशेषाङ्क

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. दीक्षा शताब्दी वर्ष
(माघ शुक्ला 2 विक्रम सम्वत् 2076 से 2077 तक)
एवं
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के हीरक वर्ष
(विक्रम सम्वत् 2002-2077)
के अवसर पर प्रकाशित

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रधान सम्पादक
डॉ. धर्मचन्द जैन
सह सम्पादक
नौरतन मेहता
मनोज कुमार जैन (पाटोली)

प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

जैन जीवनशैली : स्वरूप एवं सन्धारण	प्रो. चाँदमल कर्णावट	130
जैन जीवनशैली : एक चिन्तन	डॉ. दयानन्द भार्गव	132
पर्यावरण-सुरक्षा में जैन जीवनशैली की उपयोगिता	प्रो. (डॉ.) प्रेमसुमन जैन	136
जैन जीवनशैली द्वारा पर्यावरण और स्वास्थ्य-संरक्षण	डॉ. जीवराज जैन	143
गृहस्थ की व्रतनिष्ठ जीवनशैली	प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	147
Harmony and Peace : A Jain Perspective	*Prof. Sagarmal Jain*	155
जैन श्रावक-व्रतों के सन्दर्भ में सामाजिक संरचना	प्रो. जिनेन्द्र जैन	159
जैन जीवनशैली का महनीय अङ्ग 'प्रतिक्रमण'	प्रो. सुदीप कुमार जैन	167
जीवनशैली में स्याद्वाद का प्रयोग	प्रो. वीरसागर जैन	173
डिप्रेशन से मुक्ति में जैन सिद्धान्त उपयोगी	प्रो. अनेकान्त कुमार जैन	178
भोजन के सन्दर्भ में जैन जीवनशैली	प्रो. कमलेश कुमार जैन	184
Anekānta Philosophy as a Way of Life	*Dr. Narendra Bhandari*	189
जैन जीवनशैली के कुछ आधार बिन्दु	डॉ. पारसमल अग्रवाल	194
जैन जीवन-पद्धति में सामाजिक विकृतियाँ	प्रो. भागचन्द्र जैन	199
जैन जीवनशैली में विकृतियों के विभिन्न रूप	प्रो. श्रीयांस कुमार सिंघई	204
जैनों का आहार : कितना वैज्ञानिक	डॉ. नन्दलाल बोरदिया	207
जैन जीवनशैली और स्वास्थ्य	डॉ. के.एल. पोखरना	214
अपरिग्रही जैन जीवनशैली	डॉ. सुषमा सिंघवी	223
अपरिग्रह सिद्धान्त : सामाजिक न्याय का अमोघ मन्त्र	डॉ. कमलचन्द सोगानी	225
अनेकान्तवाद की जीवनशैली में उपयोगिता	डॉ. धर्मचन्द जैन	228
आगमों में उल्लिखित प्रमुख श्रावकों की जीवनशैली	श्री प्रकाशचन्द जैन	232
श्रावकाचार : एक प्रामाणिक जीवनशैली	डॉ. (श्रीमती) सरोज जैन	235
Śrāvakācāra And Margānusāri Śrāvaka–Guṇas for Business Excellence	*Dr. H. Kushal Chand*	241
Vows in Jainism : Importance and Application	*Dr. Jagat Ram Bhattacharya*	252
जैन जीवनशैली और तनाव-प्रबन्धन	डॉ. तृप्ति जैन	257
'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' और जैन जीवनशैली	डॉ. श्वेता जैन	266
Spirituality of Ahiṃsā : A Jaina Perspective	*Dr. Priyadarshana Jain*	272
जैन जीवनशैली में अहिंसकाहार	डॉ. पी.सी. जैन	280
कर्मवायरस की...पहेली?...समाधान है जैन जीवनशैली	श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	285
जैन जीवनशैली में अनर्थदण्डविरमण व्रत	डॉ. हेमलता जैन	290

10-11 दिसम्बर 2020
जिनवाणी 173
ISSN 2249-2011

जीवन-शैली में स्याद्वाद का प्रयोग

डॉ. वीरसागर जैन

जैनदर्शन एक अत्यन्त व्यावहारिक दर्शन है। उसके सिद्धान्त न केवल पारमार्थिक दृष्टि से, अपितु लौकिक या व्यावहारिक दृष्टि से भी अत्यन्त उपादेय सिद्ध होते हैं। यही कारण है कि आचार्य विद्यानन्द जैसे अध्ययनशील विद्वान मुनि ने भी जैनदर्शन के सभी प्रमुख सिद्धान्तों की सामाजिक/व्यावहारिक व्याख्या निम्न प्रकार से प्रसिद्ध की है-

1. **आत्मानुशासन**-स्वयं पर स्वयं का शासन।

2. **अनेकान्तवाद**-सबके साथ समन्वय की कला।

3. **अहिंसावाद**-किसी का मन व्यर्थ में मत दुःखाओ।

4. **अपरिग्रहवाद**-अति लोभ खतरे की घण्टी है।

5. **स्याद्वाद**-पहले तौलो, फिर बोलो।[1]

जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों की उक्त व्याख्या को उन्होंने 'विश्व कल्याण में उपयोगी श्रेष्ठ जीवन-निर्माण के पाँच सूत्र' शीर्षक देकर सर्वत्र प्रचारित किया है। इससे सिद्ध होता है कि जैनदर्शन एक अत्यन्त व्यावहारिक दर्शन है और उसके सिद्धान्त आत्म-कल्याणार्थ ही नहीं, विश्व-कल्याणार्थ भी अत्यन्त उपयोगी है।

आचार्य विद्यानन्द मुनि की भाँति अन्य भी अनेक मनीषी चिन्तकों ने जैनदर्शन और उसके सिद्धान्तों की व्यावहारिकता एवं लोकहित में उपादेयता पर बड़ा ही सुन्दर प्रकाश डाला है, परन्तु विस्तार-भय से यहाँ पर हम उसकी विशेष चर्चा नहीं कर सकते हैं। मात्र सत्यदेव विद्यालंकार का एक कथन उद्धृत कर अपनी बात को आगे बढ़ाते हैं। उनका यह कथन इस प्रकार है-"जैन धर्म का साम्यभाव या समाजवाद केवल मानव समाज तक सीमित नहीं है। प्राणिमात्र उसकी परिधि में समा जाते हैं... वह विपक्षी के लिए भी अपने ही समान गुञ्जाइश रखता है। यदि दूसरे के लिए गुञ्जाइश रखकर जीवन-व्यवहार किया जाये तो संघर्ष की सम्भावना नहीं रहती।... व्यावहारिक रूप में जैन धर्म की क्षमता असीम है।"[2]

आज हमारा विषय जैनदर्शन के एक अत्यन्त प्रमुख सिद्धान्त अनेकान्तवाद की सामाजिक सौहार्द में उपयोगिता पर चिन्तन करना है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इसके लिए सर्वप्रथम हमें अनेकान्तवाद का समीचीन स्वरूप समझना होगा, तभी हम उसकी सामाजिक सौहार्द में भूमिका का निर्णय एवं विचार कर पाएँगे।

क्या है अनेकान्तवाद का स्वरूप-

जैनदर्शन के अनुसार इस विश्व की सभी वस्तुएँ अनेकान्तात्मक हैं, अनेकान्तस्वरूप हैं अर्थात् उनका स्वरूप ही अनेकान्त है। अनेकान्त का अर्थ है कि उसमें अनेक 'अन्त' रहते हैं। 'अन्त' का अर्थ यहाँ धर्म, गुण, स्वभाव, विशेषता आदि समझना चाहिए तथा 'अनेक' का भी अर्थ वैसे तो अनेक (एकाधिक, बहुत, संख्यात, असंख्यात और अनन्त तक भी) समझे जा सकते हैं, किन्तु यहाँ रूढ़िवशाद् 'दो' ही और वह भी 'परस्पर' विरुद्ध प्रतीत होने वाले 'दो' ही ग्रहण किए जायें तो अधिक अच्छा रहेगा, उसी से अनेकान्तवाद का सौन्दर्य अथवा वैशिष्ट्य उभरकर सामने आ सकेगा-ऐसा जैनाचार्यों का स्पष्ट निर्देश है।

कहने का तात्पर्य यह हुआ कि विश्व की प्रत्येक वस्तु परस्पर विरुद्ध प्रतीत होने वाले दो-दो धर्मों के अनन्त युगलों का निवास-स्थान है और इसीलिए वह अनेकान्तात्मक या अनेकान्त स्वरूप है तथा इस प्रकार

ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 49 • Vol. 193 • Issue : Jan-March, 2022

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 49 Vol. 193 Issue : Jan-March, 2022

Patron

Prof. Bachhraj Dugar
Vice-Chancellor

Editors

Prof. Damodar Shastri
Prof. Nalin K. Shastree

Managing Editor

Mohan Siyol

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun - 341306 (Raj.) India

Contact us: tulsiprajnarj@gmail.com
+91-9887111345

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

CONTENTS

Āgama 01
Ācārya Mahāprajña

Articles

बुद्ध के अव्याकृत प्रश्नों के उत्तर महावीर के द्वारा 08
प्रो. धर्मचन्द जैन

जैनदर्शन में सत्ता का स्वरूप (पंचाध्यायी के विशेष परिप्रेक्ष्य में) 17
प्रो. वीरसागर जैन

Sustainable Development as Reflected in the Shrimad Bhagavad Gita 23
Dr. Santosh Kumar Behera

गीता में प्रतिपादित ज्ञान-कर्म-भक्तियोग : समन्वय दृष्टि 32
डॉ. दीपिका विजयवर्गीय

महात्मा गांधी की पर्यावरणीय दृष्टिः एक अध्ययन 41
डॉ. विकास यादव

Influence of Prekśā Meditation and Yogic Lifestyle on Weight, BMI and Triglycerides of Hyepertensive Patients: A Randomized Controlled Trial 50
Dr. Iqbal Khan Goury
Dr. Yuvraj Singh Khangarot

Jaina Concept of Self-Restraint and The Economics of Minimalism 65
K K Naulakha

बप्पभट्टि और उनका तारायणो 79
गणेश तिवारी

जैनदर्शन में सत्ता का स्वरूप

(पंचाध्यायी के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

प्रो. वीरसागर जैन*

सारांशिका

सत्ता मीमांसा के चिंतन में सभी भारतीय दर्शनों का विशेष योगदान रहा है। सभी दर्शनों में भी जैनदर्शन में इस विषय पर अत्यन्त गहराई से चिंतन किया गया है। अनेक ग्रंथों में सत्तामीमांसा का वर्णन प्राप्त होता है और सभी के द्वारा उनका मंथन भी किया गया है। प्रस्तुत आलेख में पंचाध्यायी को इस विषय के प्रतिपादन हेतु आधार बनाया जा रहा है। इस ग्रन्थ में आगम और अध्यात्म के अनेक विषयों का सुंदर रीति से निरूपण किया गया है। इस आलेख में पंचाध्यायी में से एक श्लोक को आधार बनाकर सत्/सत्ता को बड़े अच्छे ढ़ंग से समझाया जा रहा है तथा इस विषय को पुष्ट करने के लिये प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रदत्त विषय को भी ग्रहण किया जा रहा है। सत्ता का वास्तविक अर्थ सभी को ग्रहण हो, ऐसा इस आलेख का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द

सत्तामीमांसा, खंडन-मंडन, स्वसहाय, युतसिद्ध, अहेतुक, निरपेक्ष, अनादिनिधन।

* प्रो. वीरसागर जैन, प्रोफेसर, जैन दर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दल्ली-110016

प्राकृत-समय

डॉ. ज्योतिबाबू जैन

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थांक 95

ISBN978-93-90659-49-4

प्राकृत-समय

(प्राकृत विद्या : आधुनिक संदर्भ में)

(शोध)

संपादक : डॉ. ज्योतिबाबू जैन

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-110003

© डॉ. ज्योतिबाबू जैन

PRAKRIT-SAMAYA
(Reserach)
By Dr. Jyotibabu Jain

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003
Ph. : 011-24626467; 23241619 (Daryaganj)
Mob. : 9350536020; e-mail : bjnanpith@gmail.com
sales@jnanpith.net; website : www.jnanpith.net

First Edition : 2022
Price Rs. 600

अनुक्रम

संपादकीय –डॉ ज्योतिबाबू जैन
प्ररोचना– प्रो.सुदीप कुमार जैन

1. प्राकृत–काव्यों की मौलिक रमणीयता – प्रो.दामोदर शास्त्री/ 27
2. प्राकृत साहित्य में योग और ध्यान की परंपरा
– प्रो.भागचंद जैन भास्कर/ 34
3. प्राकृत–अध्ययन की उपयोगिता – प्रो.प्रेम सुमन जैन/47
4. प्राकृत साहित्य की परंपरा और उसकी विधाएं – प्रो.उदयचंद्र जैन/57
5. Importance of prakrit scriptures in modern times for our happiness - Dr.P.M Agrawal/ 66
6. प्राकृत पालि गाथाओं में साम्य – प्रो.धर्म चन्द्र जैन/ 76
7. आयुर्वेद में प्राकृत और संस्कृत की उपयोगिता – प्रो.ऋषभचंद जैन/ 85
8. प्राकृत आगमों में विज्ञान – प्रो. एन.एल.कछारा / 103
9. प्राकृत वाङ्मय में समत्व दृष्टि – प्रो.अशोक कुमार जैन/ 110
10. प्राकृत परम्परा के आचार्यो की समकालीन –युगचेतना
– प्रो.वीर सागर जैन/ 118
11. प्राकृत–सूक्तियों में लोकमंगल भावना – डॉ.रांका जैन/ 124
12. भारतीय साहित्य को प्राकृत का योगदान – डॉ.कमल कुमार जैन/ 130
13. प्राकृत शिलालेखों में समसामयिकता – डॉ.दिलीपधींग/ 145
14. प्राकृत आगमों के शैक्षिक संदर्भ – प्रो.जिनेंद्र कुमार जैन / 149
15. प्राकृतभाषा और आधुनिक संचार–माध्यम – प्रो.अनेकांत जैन/158
16. प्राकृत–काव्यों की समरसता – प्रो.जयकुमार उपाध्ये/ 166
17. आगमों में अंकित आचार–संहिता और पर्यावरण सुरक्षा – डॉ.अनिल कुमार जैन/174

प्राकृत परंपरा के आचार्यों की समकालीन युगचेतना

-प्रो. वीरसागर जैन

आचार्य समन्तभद्र और हेमचन्द्र दोनों ने ही दो श्लोक ऐसे लिखे हैं, जिनका आशय है कि जिनशासन के ह्रास और विकास- दोनों में ही मुख्य कारण वस्तुतः उसके वक्ता हैं; वर्तमान काल में जो जिनशासन का ह्रास दिखाई देता है, उसका मुख्य कारण है- सुयोग्य वक्ता का अभाव और यदि आज भी कोई सुयोग्य वक्ता मिल जाए तो इस कलियुग में भी पूरे विश्व में जिनशासन का एकच्छत्र शासन हो सकता है। आचार्य समन्तभद्र और हेमचन्द्र के वे दोनों श्लोक मूलतः इसप्रकार हैं-

कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनाशयो वा।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मीप्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः।।

- आचार्य समन्तभद्र, युक्त्यानुशासन, 6

(अर्थ- हे जिनेन्द्र ! आपके शासन के एकाधिपत्व के अपवाद का कारण वर्तमान में कलिकाल है, श्रोता का कलुषाशय है अथवा वक्ता का वचनाशय है।)

श्राद्धः श्रोता सुधीर्वक्ता युज्येयातां यदीश तत्।
त्वच्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रं कलावपि।।

- आचार्य हेमचन्द्र, वीतरागस्तोत्र, 3

(अर्थ- हे जिनेन्द्र ! यदि सुयोग्य श्रोता-वक्ता मिल जाएँ तो आज कलियुग में भी आपके शासन का एकच्छत्र साम्राज्य हो सकता है।)

गम्भीरतापूर्वक विचारणीय है कि ऐसे कौन-से गुण हैं कि जिनसे कोई सुयोग्य वक्ता आज भी पूरे विश्व को प्रभावित कर सकता है। मेरी दृष्टि से, ऐसे सुयोग्य वक्ता में निम्नलिखित दो गुण अवश्य होने चाहिए -

1. स्वयं तत्त्व को सही से समझा हो।
2. दूसरों को समझाने की कला में प्रशिक्षित हो।

अधिकांश वक्ताओं में पहला ही गुण नहीं मिलता। वे समझाते तो खूब हैं, पर वे उसे स्वयं ही ठीक से नहीं समझे होते हैं। मात्र जैसा शास्त्र से या गुरु से सुना-सीखा

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जनवरी, 2024
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2024

वर्ष : 82 अंक : 1
पौष, 2080 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 108

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2024-26
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2024-26
Posted at Jaipur RMS (PSO)

जिनवाणी

हिन्दी मासिक

ISSN 2249-2011

जनवरी, 2024

Website : www.jinwani.in

संसार की समस्त धन-सम्पत्ति भी यदि किसी को प्राप्त हो जाए, तो भी वह उसे मृत्यु से नहीं बचा सकती । -उत्तराध्ययनसूत्र

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2024-26
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2024-26
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जहा से कंबोयाणं,
आइण्णे कंथए सिया।
आसे जवेण पवरे,
एवं हवइ बहुस्सुए।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.16

जैसे कम्बोजी अश्वों में,
गुणशील मुक्त कन्थक होता।
वह गति से श्रेष्ठ कहाता है,
वैसे मुनि में बहुश्रुत होता।।

जनवरी, 2024
वीर निर्वाण सम्वत्, 2550
पौष, 2080

वर्ष 82 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- 1. यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो। 2. जिनवाणी पत्रिका में से किसी भी आलेख की सामग्री का उद्धरण/पुनर्मुद्रण आदि रूप में उपयोग करते समय 'जिनवाणी' पत्रिका, जयपुर का नामोल्लेख करना आवश्यक है।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	राष्ट्र की सशक्तता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	8
उद्‌बोधन-	माँ की तरह हो साधना	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	9
विचार-वारिधि-	जीवनोन्नायक सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
प्रवचन-	उपकारिणी सती मदनरेखा	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	11
	तन, धन और परिजन पर आसक्ति है डुबाने वाली	-भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	15
	प्रत्याख्यान का स्वरूप एवं महत्त्व	-मधुरव्याख्यानीश्री गौतममुनिजी म.सा.	18
	सुखी परिवार का सूत्र : खटपट से रहें दूर	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	22
शोधालेख-	आयुर्वेद में प्राकृत, संस्कृत और देशी भाषाओं की उपयोगिता	-डॉ. ऋषभचन्द्र जैन	27
युवा-स्तम्भ-	आत्मिक आनन्द के लिए	-श्री नितेश नागोता जैन	34
साधना-	संयमियों को आगम देता प्रेरणा	-संकलित	36
English-section	Equanimity: A Life-Changing Value from a Jaina Perspective	-Dr. Kashmira Ketan Shah	38
अध्यात्म-	गुणों का नहीं करें अभिमान	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	44
	आत्मा की अनुभूति	-श्रीमती अलका बरला	72
	भावों पर ध्यान दें	-श्री एस. सी. बाफना	76
चिन्तन-	तत्त्वार्थसूत्र क्यों महत्त्वपूर्ण है?	-प्रो. वीरसागर जैन	46
प्रासङ्गिक-	तूफ़ान	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	49
प्राकृत-जागरण-	विपुल समृद्ध प्राकृत भाषा	-डॉ. (ब्र.) समता जैन	59
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (29)	-श्री धर्मचन्द जैन	62
तत्त्वबोध-	श्रवण-प्रक्रिया एवं आत्म-विकास	-श्री पदमचन्द गाँधी	65
परिवार-स्तम्भ-	बच्चों को संस्कारशील बनाएँ	-श्री पारसमल चण्डालिया	69
जन्मदिवस-	पूज्यवर गणिवर की स्मृति कहानी	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	74
गीत/कविता-	समाज में लड़की को ब्याहना है	-सुश्री तृप्ति जैन	33
	दीक्षार्थी तुम धन्य हो	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	37
	नववर्ष प्रार्थना	-श्री राकेश मेहता	45
	सद्‌गुरु	-डॉ. रमेश 'मंयक'	64
	मंगलमय नववर्ष	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	77
	कर्मों को है गर काटना	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	95
विचार/चिन्तन-	स्वाध्यायी बनने से लाभ	-श्री महेश नाहटा	14
	जैनधर्म और विश्व शान्ति	-श्री हीरालाल ओसवाल	17
	बुरी संगत	-श्री धनराज लालचन्द छाजेड़	21
	पारिवारिक रिश्तों से दूरी	-श्री राजीव नेपालिया	43
	नूतन संकल्प लें	-श्री संजय महनोत	48
	अहिंसा ही संकटमोचक	-श्री जयदीप ढड्ढा	61
	वीर निर्वाणोत्सव 2550 वर्ष कैसे मनाएँ?	-प्रो. अनेकान्त कुमार जैन	73
	नववर्ष कैसे मनाएँ?	-श्री जैन जसराज देवड़ा	95
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौत्तमचन्द जैन	62
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	80
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	94
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	96

10 जनवरी 2024
जिनवाणी 46
ISSN 2249-2011

चिन्तन

तत्त्वार्थसूत्र क्यों महत्त्वपूर्ण है?

प्रो. वीरसागर जैन

तत्त्वार्थसूत्र आखिर क्यों इतना अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है, आइए कुछ विचार करते हैं। मेरी दृष्टि में तत्त्वार्थसूत्र के विशेष महत्त्वपूर्ण होने के कतिपय प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

1. **सूत्रात्मक होना-** तत्त्वार्थसूत्र सूत्रात्मक है। सूत्रात्मक होना बहुत बड़ी बात है। सूत्र लिखना आसान नहीं होता। उसमें आधी-आधी मात्रा का भी ध्यान रखना पड़ता है-'अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणा:।' सूत्रकार को एक-एक सूत्र लिखने के लिए सूत्र के बत्तीस दोष टालने पड़ते हैं। सूत्रों में बहुत गूढ़-गम्भीर अर्थ भरे होते हैं। जो लोग सूत्र का लक्षण जानते हैं, वे इस बात को गम्भीरता से समझ सकते हैं- अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् गूढनिर्णयम्, निर्दोषं हेतुमत्तथ्यं सूत्रमित्युच्यते बुधै: (पंचसंग्रह 4/3)।
2. **संस्कृत भाषा में होना-** तत्त्वार्थसूत्र संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है। संस्कृत भाषा में लिखा हुआ होने के कारण भी इसे विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ। अब तक का जैन साहित्य प्राकृत भाषा में ही लिखा हुआ था, जिसे संस्कृत का विद्वत्वर्ग विशेष महत्त्व नहीं दे रहा था। वहाँ तो संस्कृत का ही महत्त्व बना हुआ था, इसलिए जब यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया तो इसने उन सबका भी ध्यान आकर्षित किया।
3. **जैनदर्शन का प्रथम संस्कृत-सूत्र-ग्रन्थ-** तत्त्वार्थसूत्र जैनदर्शन का प्रथम संस्कृत-सूत्र ग्रन्थ है, इसलिए भी इसे विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। प्रथम होने के कारण यह प्राचीनतम सिद्ध हो जाता है। यह बात इसे प्रामाणिकता की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण बनाती है। आश्चर्य तो यह है कि यह प्रथम होकर भी इतना सुगठित है कि इससे अच्छा ग्रन्थ अब तक नहीं बन रहा है, वरना सब चीजें विकसित ही होती हैं कम्प्यूटर की भाँति।
4. **सभी सम्प्रदायों द्वारा मान्य-** तत्त्वार्थसूत्र की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि यह दिगम्बर-श्वेताम्बर और उनके आज तक बने सभी उपसम्प्रदायों द्वारा भी पूर्णतया मान्य है, इसकी प्रामाणिकता में किसी को भी कोई आपत्ति नहीं है। ऐसा अन्य ग्रन्थ दुर्लभ है। समयसार को दिगम्बर मानते हैं, पर श्वेताम्बर नहीं मानते। आचारांग को श्वेताम्बर मानते हैं, पर दिगम्बर नहीं मानते, किन्तु तत्त्वार्थसूत्र को सभी समान रूप से मानते हैं। इस कारण से भी यह ग्रन्थ विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
5. **अनेक टीकाएँ होना-** तत्त्वार्थसूत्र पर अगणित टीकाएँ लिखी गई हैं। उनमें से अधिकांश टीकाएँ तो आज भी उपलब्ध होती हैं। तत्त्वार्थसूत्र का टीका-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। इतना समृद्ध टीका-साहित्य अन्य किसी भी ग्रन्थ का नहीं है। इनमें भी कुछ टीकाएँ तो आकार एवं विषयवस्तु दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार अपने समृद्ध टीका साहित्य के कारण भी तत्त्वार्थसूत्र को विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
6. **सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा-** तत्त्वार्थसूत्र में सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा आ गई है। दर्शनशास्त्र मुख्यरूप से जिन तत्त्वों पर विचार-विमर्श करता है, वे सब इस एक ही ग्रन्थ में समाहित हो गये हैं। यह भी इसके महत्त्व का एक प्रमुख कारण है। वरना अन्य ग्रन्थ